द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

 (3) पारिवारिक संबंधों के गीत - परिवार समाज का ही एक अंग है। यों परिवार में सभी मिल-जुलकर रहते हैं। परस्पर एक-दूसरे के दुःख-सुख में काम आते हैं, किंतु कभी-कभी उनमें आपसी टकराव होना भी स्वाभाविक है। कहावत है - ’’चार बासण (बरतन) व्है तो बाजेइज‘‘ अर्थात् चार बर्तन होते हैं तो खनकते ही हैं। अतः परिवार में सास-बहू में कहासुनी, नणद-भावज की अनबन, पति-पत्नी में मनमुटाव हो ही जाता है। सास के व्यवहार से तंग बहू कहती है -

 ’’सासू गाली मत काढो म्हानै न्यारी कर दो

 न्यारी कर दो म्हानै जूदी कर दो

 देवर नहीं माँगू म्हैं जेठ नहीं माँगू

 बाईसा रा वीरा म्हारै साथ कर दो।

 दाम्पत्य प्रेम को उजागर करने वाला ’हींडो‘ (झूला) भी राजस्थान में बहुत प्रचलित है।

 ’’हींडो रे बड़लै री साख सूं रे

 रेशम री तणियाह

 म्हैं तो बालम हींडसा जी

 गल दे बाँहड़ियाह

 सावणिये रो हींडो रे बांधण जाय।‘‘

 प्रवासी पति के वियोग मंे व्यथित राजस्थानी नारी का कागा और कुरजां से सन्देश ले जाने का आग्रह इस गीत में प्रस्तुत हुआ है -

 ’’सूती थी रंगमहल में, सूती ने आयो री जंजाल (स्वप्न)

 कुरजा रे म्हारौ भँवर मिलादे नीं ऐ

 पाखड़ल्या में लिखूँ धणी नै ओलबा

 कुरजा ऐ म्हारौ, भँवर मिला दे नीं ऐ

 सास के तानों से व्यथित एक बहिन अपने वीरा (भाई) से कहती है -

 ’’वीरा ओ वीरा म्हानै ओलंू थारी आवै औ

 परवश रे वीरा कींकर आऊँ थारोड़े देश

 आगी-आगी आगी मायर म्हानै परणाई ओ

 चुन्दड़ी ओढ़ानै वीरा कर दी पराई ओ

 सासुजी म्हानै आडा डोडा बोले औ

 मायड़ रा जाया कींकर आऊँ थारोड़े देश।

 (4) पर्वोत्सवों के गीत - राजस्थान में ’’बारह मास चैबीस तिवार‘‘ कहावत प्रचलित है अर्थात् यहाँ पर्व एवं त्यौहार मनाए जाते हैं। जैसे - होली, गणगौर, तीज, रक्षाबंधन, बछबारस, नवरात्रा, दशहरा, दीपावली आदि। इसके अलावा कार्तिक मास में विभिन्न व्रत-उपवास आदि किए जाते हैं। इन सभी अवसरों पर गीत रस उंडेला जाता है। होली के अवसर पर पुरुष चंग बजाते हुए गैर (समूह) रूप में घूमते हैं तथा गीत गाते हैं। मारवाड़ में फागण राग में ’धूसौं‘ बड़े चाव से गाया जाता है -

 धूसौं बाजे रे, अरे हाँ रे धूँसों बाजे रे

 गजसिंह जी सा थारै मारवाड़ में धूसौ बाजै रे।

 चैत्र मास में स्त्रियाँ गणगौर-पूजन करती हुई अनेक गीत गाती हैं -

 खेलण दो गणगौर भँवर म्हानै

 पूजण दो गणगौर

 ओ जी म्हारी सहेल्यां जावे बाट

 भँवर म्हानै पूजण दो गणगौर।

 अक्षय तृतीया (आखातीज) पर बच्चे वर-वधू का वेश धारणकर लोगों के द्वार पर जाकर गाते हैं -

 आखातीज बांडा बीज

 गलवाणी रो गलियो खीच

 घालो आखा, घालो गुड़

 नहीं घालो तो पईसा दो।